

दुर्गा अष्टमी हिंदू धर्म में अत्यंत पवित्र और महत्वपूर्ण दिन है। यह दिन माँ दुर्गा के आठवें स्वरूप, **महा गौरी**, की पूजा और व्रत के लिए समर्पित है। महा गौरी शुद्धता, पवित्रता, और प्रकाश का प्रतीक हैं। दुर्गा अष्टमी व्रत विशेष रूप से नवरात्रि के दौरान मनाया जाता है।

2025 में दुर्गा अष्टमी व्रत 7 जनवरी को मनाया जाएगा। यह दिन धर्म, शक्ति, और विजय का प्रतीक है और इसे अधर्म पर धर्म की जीत के उत्सव के रूप में देखा जाता है। दुर्गा अष्टमी व्रत आत्मशुद्धि, समृद्धि, और ईश्वर की कृपा पाने के लिए रखा जाता है। आइए, इस पर्व के महत्व, विधि और लाभ के बारे में विस्तार से समझते हैं।

दुर्गा अष्टमी का धार्मिक और पौराणिक महत्व

दुर्गा अष्टमी का उल्लेख विभिन्न धर्मग्रंथों और पुराणों में मिलता है। इसके पीछे कई महत्वपूर्ण कथाएँ और मान्यताएँ जुड़ी हुई हैं:

1. महिषासुर वध की कथा:

ऐसा माना जाता है कि माँ दुर्गा ने इसी दिन महिषासुर का वध किया था। महिषासुर, जो अत्यंत शक्तिशाली और अहंकारी राक्षस था, ने देवताओं को हराकर स्वर्ग पर कब्जा कर लिया था। तब सभी देवताओं ने मिलकर माँ दुर्गा का आवाहन किया। माँ दुर्गा ने नौ दिनों तक महिषासुर से युद्ध किया और अष्टमी के दिन उसे पराजित किया।

2. श्रीराम की आराधना:

रामायण के अनुसार, भगवान श्रीराम ने रावण का वध करने से पहले माँ दुर्गा की पूजा की थी। उन्होंने 108 कमल के फूल चढ़ाकर माँ का आशीर्वाद प्राप्त किया। तभी रावण का वध संभव हो सका।

3. महाभारत में उल्लेख:

महाभारत में भी दुर्गा अष्टमी का महत्व बताया गया है। अर्जुन ने युद्ध के समय माँ दुर्गा की आराधना की और विजय का आशीर्वाद प्राप्त किया।

[माँ दुर्गा जी आरती](#)

[माँ दुर्गा 108 नाम](#)

दुर्गा अष्टमी व्रत का महत्व

1. असुर शक्तियों पर विजय का प्रतीक:

यह दिन बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। माँ दुर्गा की पूजा से सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है।

2. शक्ति और साहस का संचार:

दुर्गा अष्टमी का व्रत रखने से व्यक्ति के भीतर आत्मबल और साहस का विकास होता है।

3. धर्म और आध्यात्मिकता का पालन:

इस दिन व्रत और पूजा के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता को स्थान देता है।

4. कन्या पूजन का महत्व:

दुर्गा अष्टमी पर कन्या पूजन को विशेष महत्व दिया जाता है। यह स्त्री शक्ति के सम्मान और पूजन का प्रतीक है।

दुर्गा अष्टमी व्रत की विधि

दुर्गा अष्टमी व्रत का पालन करने के लिए निम्नलिखित विधियाँ अपनाई जाती हैं:

1. प्रातःकाल स्नान और शुद्धि

- सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
- पूजा स्थल को साफ करें और माँ दुर्गा की प्रतिमा या चित्र स्थापित करें।

2. घटस्थापना और दीप प्रज्वलन

- पूजा स्थल पर घटस्थापना करें।
- दीपक जलाकर माँ दुर्गा का आह्वान करें।

3. माँ दुर्गा की पूजा

- माँ दुर्गा के मंत्रों का जाप करें।
- उन्हें पुष्प, चंदन, धूप, अक्षत और नैवेद्य अर्पित करें।
- माँ को हलवा, पूरी और चने का भोग लगाएँ।

4. कन्या पूजन

- दुर्गा अष्टमी पर कन्या पूजन का विशेष महत्व है।
- 9 कन्याओं को भोजन कराएँ और उन्हें उपहार दें।
- उनके चरण धोकर आशीर्वाद प्राप्त करें।

5. उपवास

- व्रत रखने वाले व्यक्ति को दिनभर उपवास करना चाहिए।
- फलाहार या सात्विक भोजन का सेवन कर सकते हैं।

6. संधि पूजा

- संधि काल (अष्टमी और नवमी के बीच का समय) में विशेष पूजा की जाती है।
- इस समय को अत्यंत शुभ माना गया है।

दुर्गा अष्टमी के लाभ

दुर्गा अष्टमी व्रत रखने से अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर प्रभाव डालते हैं।

1. मानसिक शांति और आत्मबल

माँ दुर्गा की पूजा से मानसिक शांति प्राप्त होती है। व्यक्ति का आत्मबल बढ़ता है और उसे जीवन के संघर्षों का सामना करने की शक्ति मिलती है।

2. नकारात्मक ऊर्जा से रक्षा

यह व्रत बुरी शक्तियों और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है। माँ दुर्गा की कृपा से जीवन में सकारात्मकता आती है।

3. समृद्धि और सफलता

दुर्गा अष्टमी व्रत से धन, समृद्धि और सफलता का आशीर्वाद प्राप्त होता है। माँ दुर्गा की पूजा से परिवार में सुख-शांति बनी रहती है।

4. स्वास्थ्य लाभ

व्रत रखने से न केवल मानसिक बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य भी सुधरता है। यह तन और मन दोनों को शुद्ध करता है।

5. आध्यात्मिक उन्नति

यह व्रत आत्मा की शुद्धि और आध्यात्मिक प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह व्यक्ति को परमात्मा के निकट लाने में मदद करता है।

6. परिवार में सौहार्द

माँ दुर्गा की पूजा से परिवार में प्रेम, सौहार्द और एकता बनी रहती है।

दुर्गा अष्टमी पर विशेष परंपराएँ

1. महिषासुर वध का नाट्य प्रदर्शन:

कुछ स्थानों पर इस दिन महिषासुर वध का नाट्य प्रदर्शन किया जाता है। यह कार्यक्रम धर्म और विजय का प्रतीक है।

2. भजन-कीर्तन:

इस दिन भजन-कीर्तन का आयोजन किया जाता है। भक्त मिलकर माँ दुर्गा के जयकारे लगाते हैं।

3. दुर्गा सप्तशती का पाठ:

दुर्गा सप्तशती का पाठ करना इस दिन विशेष रूप से शुभ माना गया है।

4. सामूहिक कन्या पूजन:

कई मंदिरों और धार्मिक स्थलों पर सामूहिक कन्या पूजन का आयोजन किया जाता है।

निष्कर्ष

[दुर्गा अष्टमी व्रत](#) न केवल धार्मिक बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह व्रत आत्मशुद्धि, शक्ति प्राप्ति और जीवन में सकारात्मकता लाने का पर्व है। माँ दुर्गा की पूजा से व्यक्ति के जीवन में सुख-शांति, समृद्धि और सफलता का वास होता है।

इस व्रत को विधि-विधान से मनाने पर माँ दुर्गा की विशेष कृपा प्राप्त होती है और सभी प्रकार की समस्याएँ समाप्त हो जाती हैं। दुर्गा अष्टमी का पर्व हमें धर्म और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

जय माँ दुर्गा!

Read more religious content on

[Vedic Prayers](#)